शोध-सारांश

स्वतंत्र भारत से पूर्व और स्वतंत्र भारत के पश्चात एक लम्बी अवधि व्यतीत होने के बाद भी भारतीय किसानों की दशा में सिर्फ नाममात्र का ही अंतर दिखाई देता है। किसान व्यवस्था के हाथों मजबूर होकर आत्महत्या करने को अभिशप्त हैं| देश की आज़ादी के बाद देशी शासन द्वारा भी कोई ऐसा ठोस लकदम नही उठाया गया जिससे इस वर्ग की स्थिति में सुधर आये| किसान जीवन पर पूँजीवाद और अशिक्षा, अज्ञानता तथा स्वार्थांधता का दोहरा दबाव पड़ा| पूंजीवादी ताकतों के अधीन कार्य करने वाली सरकारों के कारण किसानों को आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक, मानसिक आदि सभी स्तरों पर गुलाम बनने को मजबूर कर दिया गया है। एक तरफ तो पूंजीपति अपने फायदे के लिए किसानों का शोषण कर रहा है, वहीं कुछ राजनीतिज्ञ और शासक बहते पानी में हाथ धो रहे हैं, जिसके कारण किसानों को न सिर्फ विदेशी, अपितु देशी मार भी सहनी पड़ रही है, जिसने उनके आत्मविश्वास की कमर तोड़ दी है। दूसरों का भरण-पोषण करने वाले आज जिस तरह से दुनिया छोड़ रहे हैं, वह किसी भी सभ्य और विकसित समाज के लिये कलंक से कम नहीं है। मनुष्य जीवन के मूल्य एवं मर्यादा के केंद्र में किसान वर्ग ही है। आज किसान अपने जीवन में बेहद ही कठिन एवं जटिल समस्याओं से जूझ रहा है।

उपन्यास ज़िन्दगी के सबसे नजदीक की साहित्यिक विधा है। देश और काल के परिवर्तित सन्दर्भों से जुड़े होने के कारण उपन्यास का रूप भी बदला है, किन्तु यह निश्चित है कि सृजनात्मक गद्य आज लोकप्रियता के शिखर पर है। बाल्जाक ने अपने समय और समाज का यथार्थवादी चित्रण आलोचनात्मक दृष्टि से किया। वर्तमान दौर में जो काम फ्रांसीसी साहित्य में बाल्ज़ाक और स्तेन्दल ने अपने उपन्यासों के द्वारा किया, वही काम प्रेमचन्द ने हिन्दी में अपने उपन्यासों के द्वारा किया। किसान समस्या का प्रश्न कथा साहित्य का ज्वलंत प्रश्न है। 'प्रेमचंद' और 'बाल्ज़ाक' के समय का किसान अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए संघर्ष कर रहा था। उनकी स्थिति इतनी दयनीय थी कि संपन्न वर्ग उनका हर तरह से शोषण करना चाहता था। किसान जीवन की समस्याओं के प्रति जो

गहराई और गंभीरता दोनों की रचनात्मकता में दिखती हैं, वह दोनों ही उनके समाज और राष्ट्र हित के प्रति उनकी चिंता के कारण हैं।

'प्रेमचंद' और 'बाल्ज़ाक' ने अपने समय के किसानों की जिन स्थितियों को रेखांकित किया था, कहीं न कहीं वही स्थितियां आज भी मौजूद हैं। भारत हो या फ्रांस किसान आज भी समस्याओं से ग्रस्त हैं| उनके लगातार आत्महत्या करने की सूचनाएं हमें प्रतिदिन प्राप्त होती रहती हैं। 'प्रेमचंद' और 'बाल्जाक' के साहित्य के द्वारा हमें किसानों की अर्थव्यवस्था, साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद, सामंतवाद-पुरोहितवाद आदि व्यवस्थागत पक्षों को समझने में काफी सहायता मिलती है। दोनों ही रचनाकारों के पास किसान की संस्कृति का अर्थ केवल 'मेहनत की दुनिया' नहीं है। उनके लिए किसान का अर्थ केवल 'शोषित' नहीं है। किसान अपनी संपूर्ण संस्कृति के साथ दोनों ही साहित्यकारों के कथा-साहित्य में मौजूद है। वह अपने दुःख -सुख, रीति-रिवाज़, जाति-बिरादरी, पारिवारिक संबंध, सामाजिक समझ, इच्छाशक्ति, रूढ़ि-परंपरा, मनुष्यता, जिजीविषा, बुद्धि-विवेक, धार्मिकता, आध्यात्मिकता और प्रगतिशील मूल्यों के साथ हमारे सामने आता है।

अपने शोध कार्य में मैंने पाया कि 'गोदान' और 'किसान' के रचनात्मक मूल्य एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। इन दोनों के बीच एक समानता दिखाई पड़ती है। इन दोनों रचनाओं में किसान जीवन की समस्याओं, दुःख और त्रासदी, गांव और शहर के आपसी द्वंद्व, गांवों के बदलने, टूटने और बिखरने के यथार्थ और जमींदारी के जंजाल से आतंकित किसानों की पीड़ा का जीवंत चित्रण हुआ है। प्रेमचंद और बाल्ज़ाक दोनों ही रचनाकार यद्यपि दो भिन्न दौर, परिवेश व समय के लेखक थे किन्तु दोनों ने ही अपने समय के किसानों की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक व पारिवारिक समस्याओं को उजागर किया है। किसानों की समस्याओं को उनके संघर्षों को दोनों ही रचनाकारों ने अपनी कृतियों के माध्यम से पाठक वर्ग के सम्मुख निर्भीकता एवं दृढ़ता के साथ प्रस्तुत किया है।